बागवानी

स्वर्णिम युग का सूत्रपात

बागवानी की विश्वसनीयता भूमि की उत्पादकता सुधारने, रोजगार का सृजन करने, किसानों और उद्यमियों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने, निर्यात में वृद्धि करने तथा इन सब के अलावा लोगों को पोषकीय सुरक्षा प्रदान करने में सुस्थापित है। इस क्षेत्र ने जिसमें फल, सब्जियां, कन्द व मूल फसलों, खुम्बी, पुष्पकृषि, औषधीय व सुगन्धित पादप, काजू, नारियल सहित रोपणी फसलें, तथा आयल पाम शामिल हैं, अपनी विश्वसनीयता स्थापित की है। यद्यपि 7वीं योजना में खाद्यान्नों के मामले में आत्म निर्भरता प्राप्त करने के पश्चात इसके लिये आधार तैयार हो गया था, फिर भी बागवानी पर अत्यधिक ध्यान 8वीं योजना के दौरान ही दिया गया। कृषि के सकल घरेलू उत्पाद में बागवानी का योगदान कृषि क्षेत्र के 8% से कम के आंकड़े की तुलना में 24..5% से अधिक होना आकलित किया गया है।

अत्यधिक ध्यान देते हुये बागवानी क्षेत्र में निवेश किये जाने की वजह से बागवानी की स्थिति में तथा बागवानी फसलों की उत्पादकता तथा उत्पादन में जो कई गुणा बढ़ गया है, प्रभावशाली परिवर्तन हुआ है। भारत फलों और सब्जियों के मामले में दूसरे सबसे बड़े उत्पादक देश के रूप में सामने आया है तथा काजू के निर्यात में एक प्रमुख हिस्सा इसका ही है। फलों और फलों के निर्यात में भी कई गुणा वृद्धि हुई है। अत्यधिक स्पष्टतया विकसित होने वाला मुद्दा यह है कि देश में बागवानी क्षेत्र अनेक चुनौतियों और कमियों के बावजूद गतिशील बना हुआ है और यह विकास के निर्णायक चरण में है। यह परिदृष्य जिसने कृषि व्यापार के क्षेत्र में बागवानी की क्षमता को साबित किया है, निजी क्षेत्र के क्रियाकलापों को प्रोत्साहित करता है तथा इस परिप्रेक्ष्य में गुणवत्ता प्रबंधन महत्वपूर्ण हो गया है।